प्राचीन भारत में नगरीय प्रशासन एवं उसके विविध आयाम

डॉ. सुनील कुमार

भारत में नगरीकरण का प्रारंभ प्राचीन काल में सिंधु सभ्यता से माना जाता है। थियोडॉर्सन के अनुसार "नगर एक ऐसा समुदाय है जिसमें उच्च घनत्व, गैर कृषि व्यवसायियों की प्रमुखता, जटिल श्रम विभाजन से उत्पन्न उच्च कोटि का विशेषीकरण एवं स्थानीय सरकार की औपचारिक व्यवस्था पाई जाती है।" इसी तरह लुईस ममफोर्ड ने लिखा है कि "इतिहास की दृष्टि से नगर वह बिन्दु है जहाँ समुदाय की अधिकतम शक्ति और संस्कृति का केन्द्रीकरण होता है। नगर सामाजिक सम्बन्धों की समग्रता का प्रतीक एवं स्वरूप है। यह धर्म, व्यवसाय, न्याय और ज्ञान का महत्वपूर्ण केन्द्र होता है।" नेल्सन एण्डसन ने अपने शोध पत्र में कहा कि "नवीन आविष्कार और परिवर्तन का नगरों की उत्पत्ति और विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

जब नगरों में इस तरह की विशेषताएँ एवं परिस्थितियाँ हो तो उसे सुचारु और शांतिपूर्ण रूप से चलाने के लिए एक प्रशासनिक व्यवस्था तो अवश्य होगी। इसका प्रमाण हमें भारत की प्रथम नगरीय व्यवस्था में मिलती है। जैसे – हड़प्पा के नगर नियोजित, वैज्ञानिक आधार पर निर्मित थे इसीलिए हड़प्पा सभ्यता में एक प्रशासक वर्ग था। इसी तरह सिंधु सभ्यता के नगर दो भागों में विभक्त थे पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग जो क्रमशः प्रशासनिक अधिकारी और जनसामान्य का निवास था।

प्राचीन काल में नगरीय प्रशासन की व्यवस्था सैंधव सभ्यता काल में प्रारंभ हुई थी। वह लगातार विभिन्न वनलों एवं विभिन्न नगरीकरण के चरणों में सुदृढ़ होता गया तथा अपने क्षेत्र का विस्तार किया। जिससे कालांतर में नगरीकरण एवं नगरीय प्रशासन में अनेक तत्व जुड़ते गये। जिसका परिणाम है कि वर्तमान में भारत में नगरीकरण अपने आधुनिकतम दौर स्मार्ट सिटी के दौर में पहुँच गया है।